शोधामृत
(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-4.0
Vol.-3; issue-2 (April-June) 2026
Page No- 291-296
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :
त्रिपाठी शशिकला कमलेश
शोधार्थी, शोध केंद्र - हिंदी विभाग,
विल्सन कॉलेज (स्वायत्त), गिरगांव, मुंबई.

Corresponding Author :
त्रिपाठी शशिकला कमलेश
शोधार्थी, शोध केंद्र - हिंदी विभाग,
विल्सन कॉलेज (स्वायत्त), गिरगांव, मुंबई.

डॉ. उषा यादव की बाल कहानियों में बाल मनोविज्ञान : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रस्तावना : बाल्यावस्था मनुष्य के जीवन का बहुत महत्त्वपूर्ण समय है। बच्चे के व्यवहार, आदत, रुचि और व्यक्तित्व की नींव इसी समय पड़ती है। इसलिए बचपन से ही बच्चों के विकास पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। बच्चों के मन, व्यवहार, भाषा, खेल, संवेदना तथा बौद्धिक प्रक्रियाओं के अध्ययन को बाल मनोविज्ञान कहा जाता है। इसमें केवल मानसिक ही नहीं, बल्कि शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक और बौद्धिक विकास का भी अध्ययन किया जाता है। बाल विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जो गर्भावस्था से शुरु होकर जीवनभर चलती है। आधुनिक समय में बाल मनोविज्ञान को बाल विकास के नाम से भी जाना जाता है। इसके अध्ययन से बच्चों की योग्यताओं, व्यक्तित्व और सामाजिक व्यवहार को समझने तथा उनके बेहतर भविष्य के निर्माण में सहायता मिलती है।

बीज शब्द : यमुना, भाग्यशाली, आज्ञाकारी, शीतयुद्ध, तलवारें, अवज्ञा, लज्जित, राजा - प्रजा, निर्मल, जलाशय, खलनायक, सरोवर, मांगलिक, रसायनयुक्त, लाउडस्पीकर, परीक्षाफल, रक्षाबंधन, पूर्णमासी, परीलोक, अफसोस, विशालकाय, प्रेमसागर।

मुख्य विषय : बाल साहित्य सामान्य साहित्य से अलग एक स्वतंत्र विधा है। इसमें बाल-कहानी, कविता, नाटक, एकांकी और जीवनी आदि शामिल हैं। इसे लिखते समय बच्चों की आयु, रुचि, समझ और बाल मनोविज्ञान का ध्यान रखा जाता है। बाल साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं, बल्कि बच्चों में ज्ञान, नैतिकता, जिज्ञासा, कल्पनाशक्ति, सृजनात्मकता और सामाजिक गुणों का विकास करना भी है। परिवार और सामाजिक वातावरण का बालक के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है। प्रेम, सहयोग और अच्छे संस्कार बच्चे के विकास में सहायक होते हैं, जबकि तनाव और अशांति उसके विकास को प्रभावित कर सकते हैं। बाल साहित्य की भाषा सरल, सहज और बोधगम्य होनी चाहिए, ताकि बच्चे उसे आसानी से समझ सकें और उससे जुड़ सकें। इस प्रकार बच्चों की मानसिकता और रुचि के अनुरूप

सरल भाषा में लिखा गया, उनके ज्ञान एवं व्यक्तित्व का विकास करने वाला साहित्य बाल साहित्य कहलाता है। बाल साहित्य की प्रकृति और स्वरूप को ध्यान में रखते हुए विभिन्न विद्वानों ने इसे अपने-अपने दृष्टिकोण से अलग-अलग रूपों में परिभाषित किया है।

"बाल साहित्य रोचक और प्रेरक दोनों होना चाहिए क्योंकि बाल साहित्य रोचक नहीं होगा तो बालकों को अपनी ओर आकर्षित नहीं करेगा। उसे प्रेरक भी होना चाहिए, अन्यथा वह निरुद्देश्य होने से गुणकारी नहीं हो सकता।"[1]

महादेवी वर्मा "बालक तो स्वयं एक काव्य है, स्वयं ही साहित्य है।"[2]

बच्चों की प्रिय पत्रिका के चंदामामा के संपादक श्री बालशौरि रेड्डी ने कहा है कि "बाल साहित्य वह है जो बच्चों के पढ़ने योग्य हो, रोचक हो, उनकी जिज्ञासा की पूर्ति करने वाला हो। उसमें बुनियादी तत्वों का चित्रण हो। बच्चों के साहित्य में अनावश्यक वर्णन न हो। कथावस्तु में अनावश्यक पेचीदगी न हो। वह सरल, सहज और समझ में आने वाला हो। सामाजिक दृष्टि से स्वीकृत तथ्यों को प्रतिपादित करने वाला हो।"[3]

डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' के अनुसार "ऐसा बाल साहित्य जिसे पढ़कर बच्चे आनंदित हों, उनका सम्यक विकास हो और वे आत्म सुधार तथा जीवन के संघर्षों से जूझने की दिशा में क्रियाशील हो सकें, सही मायने में यही बाल साहित्य है। भले ही उसकी रचना बाल साहित्य के रूप में नहीं हुई हो। वस्तुतः बाल साहित्य का प्रणयन अत्यंत कठिन कार्य है। बच्चों द्वारा स्वयं अपने लिए लिखा जाना कठिन है और बड़े कभी बाल मानसिकता से ऊपर उठ चुके होते हैं। बाल साहित्य लेखन को इसलिए 'परकाया प्रवेश' की संज्ञा दी गई है। बाल अनुभूतियों को आत्मसात कर उसे उन्हीं की भाषा में प्रस्तुत करने वाला ही वास्तविक बाल साहित्यकार है।"[4]

डॉ. उषा यादव की बाल कहानियों में बाल मनोविज्ञान के विभिन्न पक्षों का सहज और प्रभावशाली चित्रण मिलता है। उनकी कहानियों में बच्चों की भावनाओं, इच्छाओं, जिज्ञासा, कल्पना और व्यवहार को विशेष महत्त्व दिया गया है। उनकी कहानियों में भावनात्मक मनोविज्ञान के माध्यम से प्रेम, स्नेह और सुख-दुःख, प्रेरणात्मक मनोविज्ञान के माध्यम से आत्मविश्वास, साहस और परिश्रम, तथा सामाजिक मनोविज्ञान के माध्यम से मित्रता, सहयोग, समानता और भाईचारे जैसे गुणों को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही, बच्चों की कल्पनाशक्ति और सृजनात्मकता को भी महत्त्व दिया गया है। इस प्रकार उनकी बाल कहानियाँ मनोरंजन के साथ बच्चों **के** बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और रचनात्मक विकास में सहायक हैं।

भावनात्मक मनोविज्ञान : डॉ. उषा यादव की बाल कहानियों में बच्चों की भावनाओं, संवेदनशीलता, दया और सहानुभूति का सुंदर चित्रण मिलता है। उनके बाल पात्र दूसरों के दुःख को समझते हैं और उनकी मदद के लिए आगे आते हैं। जैसे दीपिका कबाड़ा बीनने वाली लड़की के प्रति दया दिखाती है, कंचन घायल बूढ़ी महिला की सहायता करती है और विनीता आर्थिक कठिनाइयों का सामना करती है। ये पात्र बच्चों में मानवता, दया और सहानुभूति की भावना विकसित करते हैं। उनकी कहानी 'सपना सतरंगी' में बाल मनोविज्ञान के साथ सामाजिक समस्या को भी दिखाया गया है। नेहा डॉक्टर बनना चाहती है, लेकिन उसके पिता रामेश्वर उसे पढ़ाई के बजाय घर के काम और अच्छी गृहिणी बनने की सीख देते हैं। इसके माध्यम से लड़कियों की शिक्षा और स्वतंत्रता से जुड़ी समस्या को उजागर किया गया है। इसका उदाहरण हम देख सकते हैं

"लड़की होने से क्या हुआ," नेहा ने बहस की, "क्या मैं इंसान नहीं हूँ? क्या मेरे पास दिमाग नहीं है? फिर मैं डॉक्टर क्यों नहीं बन सकती?" "क्योंकि तुझे कल पराये घर जाना है। माता-पिता के नाम पर कोई उंगली न उठाये, इसलिए अभी से खुद को सुयोग्य गृहिणी के रूप में तैयार करना है। रसोई के कामों में माँ की मदद करो। अचार-बड़ियाँ-मुरब्बे बनाना सीखो। स्वेटर बुनना सीखो। यही गुण-हुनर कल तुम्हारे काम आएँगे," रामेश्वर ने समझाया।"[5]

यादव जी एक बालिका के माध्यम से आत्मविश्वास को दर्शाती है। जब नेहा करती है कि क्या मैं इंसान

नहीं हूँ? क्या मेरे पास दिमाग नहीं है? तब वर्तमान समाज की लड़की उसकी आत्म चेतना, तर्कशक्ति और उसके अधिकारों के प्रति जागरुकता को दर्शाती है। नेहा अपने भविष्य और शिक्षा को लेकर स्वतंत्र सोच रखती है। वह डॉक्टर बनना चाहती है। उसकी इच्छा, रुचि, महत्वाकांक्षाएँ तथा व्यक्तिगत विकास प्रमुख होता है। वहीं दूसरी ओर रामेश्वर अपनी सामाजिक पुरानी परंपरा और मान्यताओं तथा लड़के-लड़की के बीच भेदभाव को दर्शाता है। इसी तरह उषा यादव की 'खूब उड़ाई दावत' नामक कहानी में स्वर्णा के मन में नानी के प्रति निर्माण हुआ गुस्सा, असंतोष को पछतावा तथा रुचि आदि दिखाई देती है जिसकी कुछ पंक्तियाँ हम देख सकते हैं-"स्वर्णा कुछ न बोली। मन-ही-मन नानी पर गुस्सा तो बहुत था उसे, पर क्या कहती? कभी सिर्फ फल खिलाकर और कभी मोटी रोटियों के साथ ढेर-सी हरी सब्जी खिलाकर नानी ने कितना मूर्ख बनाया था उसे। चाट-पकोड़ी, मिठाई, फ़ास्ट फूड या कोल्ड ड्रिंक कभी चखने तक को नहीं दी। हूँ, पहले पता होता, तो इनके घर नहीं रुकती वह? सोना के साथ शहर ही चली जाती। पर अब तो पूरा महीना बीत चुका था, शिकायत करने का कोई फायदा न था। रात होने पर वे दोनों सरोवर के किनारे जाकर परियों के आने का इंतजार करने लगीं। ठीक अभी रात को परियाँ आसमान से उतरीं और स्वर्णा को देखकर खुशी से चीख उठीं। उनके मुँह से सिर्फ एक वाक्य निकला - "अरे, सोना की नानी का जादू तो सचमुच कमाल कर गया।" इतनी प्रसन्न हुईं वे सब, नाच-गाने में रात कटते देर न लगी।"[6]

उपरोक्त उदाहरण के माध्यम से लेखिका बालकों को यह समझाने की कोशिश कर रही है, कि आज के बालकों को चटपटे चीजों को खाना बहुत पसंद आता हैं। जैसे - चाट, पकौड़ी, मिठाई, फास्ट- फूड या कोल्ड ड्रिंक आदि चीजों को बालक हर रोज खाना पसंद करते हैं। जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। बालक घर का बना पौष्टिक भोजन खाना पसंद नहीं करते हैं। ये खाना बालकों के शारीरिक एवं मानसिक तौर पर बहुत अच्छा होता है। तथा बालक तुरंत की सुख सुविधा की ओर आकर्षित जल्दी हो जाते हैं। जबकि उनके माता-पिता बालकों को लंबे समय तक की सुरक्षा को देखते हैं। और पारिवारिक मार्गदर्शन उनके व्यक्तित्व निर्माण में भी सहायक होता है।

बाल मनोविज्ञान : डॉ. उषा यादव की कहानियों में बालक पात्र जिज्ञासु, कल्पनाशील और संवेदनशील प्रवृत्ति के है। वे प्रश्न करते हैं, नई चीजों को जानने की कोशिश करते हैं, तथा अपने अनुभवों से सीखते हैं। रचनाकार बालकों की भावनाओं, मित्रता, कौतूहल और तर्कशीलता को महत्त्व देती हैं। इसका उदाहरण 'एक था कालू' नामक कहानी में देख सकते हैं, जो इस प्रकार है -

"हरियल तोते जी सच मानो
रंग तुम्हारा लख ललचाऊँ
मुझको वह उपाय बतलाओ
लाल चोंच वाला हो जाऊँ।"[7]

डॉ. उषा यादव की कहानियों में कल्पनाशक्ति और सृजनात्मकता का सुंदर चित्रण मिलता है। यहाँ कौआ मनुष्य की तरह बोलता, सोचता और अपनी भावनाएँ व्यक्त करता है। वह हंस के सफेद रंग से प्रभावित होकर स्वयं भी सफेद बनने की इच्छा करता है। वास्तव में पशु-पक्षी मनुष्य की तरह बातचीत नहीं कर सकते, लेकिन लेखिका ने कल्पना के माध्यम से बच्चों के मन में जिज्ञासा, खुशी और सृजनात्मक सोच को बढ़ावा दिया है। इसी प्रकार 'नन्ही शहजादी' कहानी में भी बाल पाठकों के लिए उत्सुकता, आनंद और कल्पना से भरा वातावरण बनाया गया है, जो बच्चों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

"माँ का वह जादुई बक्स देर तक उसे भूला नहीं। और तो और, रात को सपने में भी वह बक्स उसे दिखता रहा। कभी सुनहरी-रुपहली कढ़ाई का गुलाबी रंग का रेशमी रुमाल लहराता दिखाई देता, कभी सलमे-सितारों से कढ़ा नीला-सफेद बटुआ नज़र आता। सच्चे मोतियों की तो पूरी माला ही.....।"[8]

ऊपर के उदाहरण में यादव जी माँ का जादुई बक्सा कहकर एक साधारण बक्स को रहस्यपूर्ण एवं

आकर्षक बना दिया हैं। जब बच्ची सोती है तो वह बक्सा उसके सपनों में आता हैं जिसमें सुनहरी रुपहाली कढ़ाई का गुलाबी कलर का रेशमी रुमाल और बटुआ हैं, जिसमें मोती का माला हैं। यह चित्र बाल पाठकों की आँखों के सामने एक सुंदर एवं मनमोहक दृश्य निर्माण करता है। जिससे बालकों के मन में जानने की जिज्ञासा तथा कल्पना शक्ति को उजागर करता है। बालकों के जीवन में बहुत सारी छोटी-छोटी वस्तुएँ जिज्ञासा का रूप धारण कर लेती है। यही कारण हैं कि कहानी में मनोरंजन, आकर्षक तथा भावनात्मक सोच बनी रहती हैं।

प्रेरणात्मक मनोविज्ञान : प्रेरणात्मक मनोविज्ञान बच्चों **में** साहस, आत्मविश्वास, परिश्रम और लक्ष्य प्राप्ति की भावना विकसित करता है। उषा यादव की 'विजेता' कहानी में बालिका की दृढ़ता, आत्मविश्वास और जिम्मेदारी का सुंदर चित्रण है। यह कहानी बच्चों को कठिनाइयों से लड़कर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। जिसकी कुछ पंक्तियाँ उदाहरण के लिए प्रस्तुत है-"दीदी, आप चिंता न करें। मैं तूफानों से डरना नहीं, लड़ना जानती हूँ। मुझे मालूम है, मेरे पापा नौकरी तलाश रहे हैं। आज न सही कल, उन्हें कोई काम मिल ही जाएगा। जब तक मेरी बहनें अपने आपको बेसहारा न समझें, इसलिए मैं मेहनत करके उन्हें निश्चित रखना चाहती हूँ।"[9]

बालिका में आत्मविश्वास, साहस, जिम्मेदारी और संघर्षशीलता दिखाई देती है। "मैं तूफान से डरना नहीं, लड़ना जानती हूँ" उसके साहस और सकारात्मक सोच को दर्शाता है। वह परिवार और छोटी बहनों की जिम्मेदारी निभाते हुए कठिन परिस्थितियों में भी मेहनत और धैर्य से आगे बढ़ती है। यादव जी ने बालिका के विचार, व्यवहार और मानसिक विकास का सुंदर चित्रण किया है।

सामाजिक मनोविज्ञान : सामाजिक मनोविज्ञान का अर्थ व्यक्ति के परिवार, मित्रों और समाज के साथ संबंधों से है। बाल साहित्य में इसके माध्यम से मित्रता, सहयोग, सहानुभूति, भाईचारा और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित की जाती है। इससे बच्चों में सामाजिकता, संवेदनशीलता और मिल-जुलकर रहने की भावना का विकास होता है।

"तेरे दादा एक पैसे का आटा ले आते, एक की दाल, एक का घी और चौथे पैसे में गुड़-नमक-मिर्च-मसाले वगैरह। बस, एक इकन्नी में पूरे परिवार के चार वक्त के खाने का इंतज़ाम हो जाता।" बड़े लोग चौंकते, "सिर्फ एक इकन्नी में?" वह मुस्कुरातीं, "और क्या।" छोटे बच्चे अचंभित होते, "एक इकन्नी क्या होती है दादी अम्मा?"[10]

छोटे बच्चे स्वभाव से जिज्ञासु होते हैं। वे किसी भी चीज़ को देखकर या सुनकर उसके बारे में प्रश्न करते हैं। जैसे 'एक इकन्नी क्या होती है दादी अम्मा?' यह उसकी सीखने की इच्छा और नई जानकारी की उत्सुकता को दर्शाता है। लगातार प्रश्न पूछने से बच्चों के मानसिक, बौद्धिक और कल्पनात्मक विकास में सहायता मिलती है। दादी अम्मा के अनुभवपूर्ण ज्ञान से बालकों के मानसिक और ज्ञानात्मक विकास में सहायता मिलती है। पारिवारिक बातचीत के माध्यम से बुजुर्ग बच्चों को सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित कराते हैं।

कल्पनात्मक मनोविज्ञान : कल्पनात्मक मनोविज्ञान से आशय बालक की कल्पना करने, नई-नई कल्पनाएँ गढ़ने और अपने विचारों को रचनात्मक रुप देने की मानसिक प्रवृत्ति से है। बाल साहित्य में कल्पनात्मक मनोविज्ञान के माध्यम से जादुई घटनाओं, बोलते पशु-पक्षियों, परियों, अद्भुत वस्तुओं और काल्पनिक संसार का चित्रण किया जाता है। ऐसी कहानियाँ बच्चों की जिज्ञासा, रचनात्मकता, सोचने की क्षमता और कल्पनाशक्ति को विकसित करती हैं। कल्पना के माध्यम से बालक वास्तविक जीवन की परिस्थितियों को भी अपने ढंग से समझने और नए समाधान खोजने का प्रयास करता है। इस प्रकार कल्पनात्मक मनोविज्ञान बाल साहित्य को रोचक बनाने के साथ-साथ बालक के मानसिक एवं रचनात्मक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस बात को स्पष्ट करने के लिए हम कुछ उदाहरण को देख सकते हैं। उषा यादव की कहानी 'पूर्णिमा की रात' नमक में बालिका की जिज्ञासा, कल्पना शक्ति तथा आकर्षक की भावना को बड़े ही मनमोहन तरीके से प्रस्तुत किया गया हैं। जिसकी

कुछ पंक्तियाँ उदाहरण के लिए प्रस्तुत है-"अंदर पहुँचकर वे सब भौंचक्की रह गईं। बाप रे! इमारत है या पूरी जादूगरी? एक ही छत के नीचे भाँति-भाँति का सामान। कहीं फल और सब्जियाँ। कहीं दालें और मसाले। कहीं चमकते-दमकते बर्तनों की कतार तो कहीं बच्चों के लिए खेल-खिलौनों की भरमार। कहीं गुड़िया ही गुड़िया, तो कहीं गुड़ियों के लिए खूबसूरत गुड़ियाघर। कनक ने ललचाकर सोचा कि अगर यह गुड़ियाघर उसे मिल जाए, तो अपनी सहेलियों पर कितनी शान जमाए! और फिर, गुड़ियाघर के साथ-साथ उसे तो वह सुनहरी पोशाक भी चाहिए, जो शीशे के शो-केस में सजी है। साथ में यदि जड़ाऊ हार और कंगन मिल जाएँ, तो इस बार अपने जन्मदिन को वह कितने ठाठ से मनाए! परी लोक की राजकुमारी की साज-सज्जा ऐसी ही अनोखी होनी भी चाहिए।"[11]

उपर्युक्त उदाहरण में बालकों का व्यापक एवं रंग-बिरंगे सामानों से भरे वातावरण को देखकर भौचक्का हो जाता कोई बड़ी बात नहीं है। क्योंकि ये उनके जिज्ञासा एवं आकर्षक भावना को व्यक्त करता हैं। वही कनक की गुड़िया घर, सुनहारी पोशाक, हार और कंगनों को पाने की इच्छा, कल्पना शक्ति तथा रुचियों को प्रस्तुत करता हैं। प्रत्येक बालक में दूसरों के खिलौने को देखकर मन में लालच आ जाती है। वह दूसरों की खेल - खिलौने के द्वारा अपने सपनों और कल्पनाओं को तैयार करते है। कनक खुद भी परीलोक की राजकुमारी की तरह सज धज कर देखना चाहती है, तथा अपने सहेलियों पर शान जमाने की भावना रखती है। जो बालकों में सामाजिक स्वीकृति और तारीफ पाने की साधारण इच्छा को भी प्रस्तुत किया गया हैं। इसी तरह उषा यादव की कहानी 'पतीली में खीर' नामक में मोहन का प्रोत्साहन, जिज्ञासा, विश्वास तथा कल्पनाशक्ति का बहुत ही अच्छा वर्णन किया है। जिसकी कुछ पंक्तियाँ उदाहरण के लिए निम्नलिखित है -"तुम्हें तो कभी कुछ पता ही नहीं रहता है।" मोहन झुंझला गया, "जानती हो, आज सब बच्चों की माँ स्वादिष्ट खीर बनाएगी। रात में खुले आसमान के नीचे रख देने से उसमें चाँद की किरणों से अमृत वर्षा होगी। सुबह सब लोग उस खीर को खुश होकर खाएँगे।"[12]

उपरोक्त प्रसंग में बालक का उत्साह, जिज्ञासा, कल्पनाशक्ति तथा संस्कृतिक विश्वास के प्रति मोहन का आस्था गहरा हैं। वह चाँद की किरणो से खीर में अमृत वर्षा होने वाली बात बड़े ही विश्वास के साथ करता है। मोहन झूंझला जाता हैं क्योंकि वह अपनी जानकारी और अनुभव को महत्त्वपूर्ण मानता है। तथा वह चाहता है कि दूसरे लोग भी उसकी बातों को गंभीरता से सुने। यादव जी ने बालक मोहन के माध्यम से भावनात्मक अभिव्यक्ति, सामाजिक सहभागिता और सांस्कृतिक परंपराओं के प्रति जिज्ञासा को भी प्रस्तुत करती हैं।

निष्कर्ष : डॉ. उषा यादव की बाल कहानियों का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि उनकी रचनाओं में बाल मनोविज्ञान के विविध पक्षों का सहज और प्रभावी चित्रण हुआ है। उनकी कहानियों में बालकों की भावनाओं, इच्छाओं, जिज्ञासाओं, कल्पनाओं और व्यवहार को विशेष महत्व दिया गया है। भावनात्मक मनोविज्ञान के माध्यम से बच्चों के प्रेम, स्नेह और संवेदनाओं को अभिव्यक्ति मिलती है, वहीं बाल मनोविज्ञान में उनकी स्वाभाविक जिज्ञासा, चंचलता और बाल-सुलभ व्यवहार सामने आते हैं। प्रेरणात्मक मनोविज्ञान बच्चों में आत्मविश्वास, परिश्रम और साहस की भावना विकसित करता है, जबकि सामाजिक मनोविज्ञान सहयोग, मित्रता, समानता और सामाजिक जिम्मेदारी का बोध कराता है। कल्पनात्मक मनोविज्ञान बच्चों की कल्पनाशक्ति और सृजनात्मकता को अभिव्यक्त करता है। अतः कहा जा सकता है कि डॉ. उषा यादव की बाल कहानियाँ बालमन की गहरी समझ और संवेदनशील दृष्टि का परिचय देती हैं तथा मनोरंजन के साथ शिक्षा, संस्कार और जीवन-मूल्यों का समन्वय करते हुए बच्चों के सर्वांगीण व्यक्तित्व-विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. वीरेंद्र जैन के साहित्य में बाल मनोविज्ञान / कमलेश कुमारी https://share.google/T6ESn35Ec3QgA4Sk4 22.08.2026, टाइम 3:30 pm
2. वीरेंद्र जैन के साहित्य में बाल मनोविज्ञान / कमलेश कुमारी https://share.google/T6ESn35Ec3QgA4Sk4 22.08.2026, टाइम 3:30 pm

3. वीरेंद्र जैन के साहित्य में बाल मनोविज्ञान / कमलेश कुमारी https://share.google/T6ESn35Ec3QgA4Sk4 22.08.2026, टाइम 3:30 pm
4. जैन के साहित्य में बाल मनोविज्ञान / कमलेश कुमारी https://share.google/T6ESn35Ec3QgA4Sk4 22.08.2026, टाइम 3:30 pm
5. डॉ. यादव उषा, दादी अम्मा का ख़ज़ाना, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, दिल्ली - 110054, प्रथम संस्करण- 2014, पे.न.13
6. डॉ. यादव उषा, दादी अम्मा का ख़ज़ाना, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, दिल्ली - 110054, प्रथम संस्करण- 2014, पे.न.25
7. डॉ. यादव उषा, बोलते खंडहर, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, दिल्ली- 110003, प्रथम संस्करण- 2020, पे.न.50
8. डॉ. यादव उषा, बोलते खंडहर, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, दिल्ली- 110003, प्रथम संस्करण- 2020, पे.न. 43
9. डॉ. यादव उषा, दादी अम्मा का ख़ज़ाना, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, दिल्ली - 110054, प्रथम संस्करण- 2014, पे.न.44
10. डॉ. यादव उषा, दादी अम्मा का ख़ज़ाना, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, दिल्ली - 110054, प्रथम संस्करण- 2014, पे.न.28
11. डॉ. यादव उषा, दादी अम्मा का ख़ज़ाना, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, दिल्ली - 110054, प्रथम संस्करण- 2014, पे.न.53
12. डॉ. यादव उषा, बोलते खंडहर, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, दिल्ली- 110003, प्रथम संस्करण- 2020, पे.न.63

•